INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

# केदारनाथ अग्रवाल की कविता में वर्णित सामाजिक यथार्थ

## (Social reality described in the Poem of Kedarnath Agarwal)

**Dr. Sharmilaben S. Patel**
HOD & P.G. Incharge,
Shree Rang Navchetan Mahila Arts College,
Valia, Bharuch (Gujarat, India)

**DOI No.** 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2025-23661645/IRJHIS2507021

**परिचय :**

केदारनाथ अग्रवाल हिंदी कविता के उन सशक्त हस्ताक्षरों में से हैं जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से जन-जीवन, ग्राम्य संस्कृति, श्रमिक वर्ग, स्त्री संवेदना और प्रकृति के यथार्थ को जीवंत किया है। प्रगतिशील काव्यधारा से जुड़े अग्रवाल का काव्य सामाजिक यथार्थ के प्रभावशाली चित्रण का उदाहरण है। वे श्रमिकों, किसानों और वंचित वर्गों की बात करते हैं। उनका उद्देश्य केवल यथार्थ को प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उसमें परिवर्तन की चेतना को भी जगाना है।

सामाजिक यथार्थ की अवधारणा सामाजिक यथार्थ साहित्य की वह प्रवृत्ति है जो समाज की विसंगतियों, अन्याय, शोषण, संघर्ष और आम जनजीवन की सच्चाइयों को निरूपित करती है। यह प्रवृत्ति प्रगतिशील साहित्य की प्रमुख विशेषता है। केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में यह यथार्थ अनेक रूपों में उभरता है—कभी ग्रामीण पीड़ा के रूप में, कभी मजदूरों की दयनीय स्थिति में, कभी स्त्री श्रमिक की छवि में, तो कभी किसानों की संघर्षशीलता में।

1. **ग्रामीण जीवन की सच्चाइयाँ–**

अग्रवाल की कविताएँ ग्रामीण परिवेश की गूंज हैं। उनकी कविता 'यह गाँव' में ग्रामीण जीवन का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं:

"यह गाँव, सिर पर उठाए रोज़ी की टोकरी,
भूख की धूप में पसीने से तर-बतर फिर भी न हारता" 1(अग्रवाल, 1984, पृ. 42)

यहाँ गाँव को एक जीवंत इकाई की तरह चित्रित किया गया है जो विषमता के बावजूद हार नहीं मानता। उनका गाँव 'दीन-हीन' नहीं बल्कि श्रमशील, संघर्षशील और स्वाभिमानी है।

**2. श्रमिक वर्ग की पीड़ा और श्रम की गरिमा–**

केदारनाथ अग्रवाल की कविता में श्रमिक वर्ग की स्थिति अत्यंत सजीव ढंग से उभरती है। वे श्रम को पूजनीय मानते हैं। कविता 'हम मेहनत वालों से' में वे लिखते हैं:

"हम मेहनत वालों से जब दुनिया पूछेगी कौन तुम्हारे साथ था
हम कहेंगे, ईंट गारा और गारा2 (अग्रवाल, 1984, पृ. 78)

यहाँ 'ईंट गारा' प्रतीक है उस श्रम का, जिससे सभ्यता की नींव रखी जाती है। यह केवल चित्रण नहीं बल्कि मेहनतकश वर्ग के आत्मसम्मान की स्थापना है।

**3. स्त्री संवेदना और यथार्थ–**

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में स्त्री को सशक्त और संघर्षशील रूप में चित्रितकिया गया है। वे स्त्री को एक श्रमिक, एक किसान, एक माँ और एक जीवन-दायिनी के रूप में प्रस्तुत करते हैं:

"हाथों में कुदाल लिए,
धूप में तपती वह मेरी जननी है" 3(अग्रवाल, 1984, पृ. 119)

यह चित्रण स्त्री की पारंपरिक छवि से हटकर है। यहाँ वह खेतों में श्रम करती एक स्त्री है, जो जीवन का आधार है। इस प्रकार उनकी कविताएँ नारी जीवन के यथार्थ को उसकी सम्पूर्णता में चित्रित करती हैं।

**4. प्रकृति और जीवन का द्वंद्वात्मक संबंध**

केदारनाथ अग्रवाल की प्रकृति कविता केवल सौंदर्यपरक नहीं है। उनकी प्रकृति मानव जीवन से गहराई से जुड़ीहुई है। एक कविता में वे लिखते हैं:

"नदी नहीं होती तो खेत बंजर होते और भूख नाचती मुँह पर"4 (अग्रवाल, 1984, पृ. 135)

यह पंक्ति प्रकृति के प्रति उनकी संवेदना और उसकी सामाजिक उपयोगिता को रेखांकित करती है।

**5. पूँजीवाद और वर्ग संघर्ष**

अग्रवाल की कविताएँ पूँजीवादी व्यवस्था और सामाजिक विषमता की आलोचना करती हैं। वे किसान, श्रमिक और साहूकार के बीच के अंतर को रेखांकित करते हैं

"साहूकार की आँख और किसानों की सूखी जमीन दोनों में अंतर बहुत है" 5(अग्रवाल, 1984, पृ. 151)

यहाँ आँखें पूँजीवादी लालच का प्रतीक हैं, जबकि सूखी जमीन मेहनतकश किसान की असहायता का।

**6. परिवर्तन की आकांक्षा और जन चेतना–**

केदारनाथ अग्रवाल केवल यथार्थ को चित्रित नहीं करते, वे उसमें बदलाव की प्रेरणा भी देते हैं:

"यह हवा बदलेगी खेतों की ओर दौड़ेगी और हल से होगी शुरुआत"6 (अग्रवाल, 1984, पृ. 160)

यह परिवर्तन की आशा और संघर्ष की चेतना का सूचक है। उनका यथार्थ चित्रण निराशावादी नहीं है, बल्कि क्रांतिकारी है।

**7. शोषण और प्रतिरोध –**

उनकी कविताओं में शोषण की तीखी आलोचना और उसके विरुद्ध प्रतिरोध का स्वर मिलता है। कविता 'हिंसक समय में' में वे लिखते हैं:

"समय का पेट हिंसक है वह निगल जाता है
अनाज और छोड़ देता है भूख" 7(अग्रवाल, 1984, पृ. 167)

यह शोषण का यथार्थ रूप है जहाँ मेहनतकश को भूख ही मिलती है।

**8. जनभाषा और सादगी का यथार्थ–**

उनकी भाषा सरल, जनसुलभ और सशक्त है। वे क्लिष्टता से दूर रहकर आमजन की भाषा में बात करते हैं। यही भाषा उनके सामाजिक यथार्थ को और भी प्रभावी बनाती है।

**9. समतावादी दृष्टिकोण के पक्षधर-**

केदारनाथ अग्रवाल समाज में समतावादी दृष्टिकोण के पक्षधर थे। वे शक्ति, सामंतों, धन कुबेरों की परवाह नहीं करते थे। वह समाज में शांति, सद्भावना और सुखद वातावरण स्थापित करना चाहते है। परंतु सामाजिक अर्थव्यवस्था ने आज आम आदमी की कमर तोड दी है। मनुष्य मनुष्य में बिखराव पैदा हो गया है। एक और तो ऊंची ऊंची अट्टालिकाएं आकाश चूम रही हैतो दूसरी

तरफ़ झुग्गी झोंपड़ियों में कीड़े मकोड़ों की तरह मज़दूर अपना पेट पाल रहे है ठंडी, गरमी, बरसात सह रहे है। यही तो सामाजिक बिखराव की स्थिति है। दृष्टव्य है -

"थैली शाह का यह कुत्ता महागुरु है,
मज़दूरों की बोटी बोटी खून बहाकर खा जाता है
बेचारे तड़पा करते है।
भेड़िए सा भयंकर हो गया यथार्थ
न कोई बचाव, न कोई सुझाव।"8

आज समाज और देश में अनगिनत अत्याचार हो रहे है और आम आदमी इस त्रासदी को झेलते झेलते ऊब गया है। सरकारी व्यवस्था भी असमर्थ की अनदेखी करती है।

**10. किसान जीवन का यथार्थ-**

साहित्य और समाज अन्योनाश्रित है। साहित्य में ऐसा कोई विषय नहीं है, जिस पर कलम नहीं चलायी जा सकी हो। भारत कृषिप्रधान देश है, तो किसान जीवन साहित्य से अछूता क्यो रहेगा। फिर ए एक तिहाई आबादी किसान पर उतना साहित्य नहीं लिखा गया है, जितना लिखा जाना चाहिए। वैश्वीकरण के इस दौर में आज देश के हर क्षेत्र में परिवर्तन दिखाई देता है, परंतु किसान का जीवन दिन- प्रतिदिन इतना बदहाल हो रहा कि उसे आत्महत्या करने पर विवश होना पड़ रहा है। साहित्य में किसान जीवन की बातें आती है तो हमें प्रेमचंद के गोदान का होरी बरबस ही याद आ जाता है। होरी के माध्यम से प्रेमचन्द ने सामंती दौर के किसान द्वंद्व, संघर्ष और विवशताओं का जीवन चित्र खींचा है। वैसा ही कवि केदारनाथ ने अपनी कविताओं में बुंदेलखंड में संघर्षमय जीवन जीने वाले किसान जीवन के कई बिम्ब उकेरे है।

केदार की चेतना मूलतः किसान की चेतना है। प्रेमचंद की तरह उनका जन्म भी किसान परिवार में नहीं हुआ, किन्तु अपनी सहज सहृदयता के कारण दोनों ही किसान जीवन में धुल मिल गया। बचपन के संस्कार दोनों में गहरे है। प्रेमचंद भारतीय जनता की क्रांतिकारी हलचल देखने को जीवित न रहे थे, केदार ने वह हलचल देखी ही नहीं थी, वह उसके साथ आगे बढे थे।

कवि केदारनाथ का उद्देश्य श्रम की महिमा और गरिमा को प्रतिष्ठित करना भी रहा है। उनकी कविताओं में किसान अक्सर काम करते हुए ही दिखाया गया है -

" पैनी किसी खेत के भीतर,
दूर कलेजे तक ले जा कर,
जोत डालता है मिट्टी को।"9

दूर खड़े होकर किसान को देखने वाले कवि और होंगे, केदार बहुत नजदीक से उसकी श्रम प्रकिया को देखते और उसका वर्णन करते है -

" मेरे खेत में हल चलता है।
फाड़ कलेजा गड़ जाता है।
तड़ तड़ धरती ताड़काता है।
राह बुनता बढ़ जाता है।10

'लोक और आलोक' में ही श्रम पर इसी रंग में एक बहुत ही सुंदर कविता है-"छोटे हाथ "। सुंदर मुख सुंदर हाथ की भी उपमा कमल से दी गयी है। लेकिन खेत जोतनेवाले किसान के हाथ?

केदार के लिए वे कमल जैसे है, लाल कमल जैसे, जो सवेरा होते ही कम में लग जाते है। हाथ का काम में लगना कमल का खिलना है-

"छोटे हाथ, सवेरा होते
लाल कमल से खिल उठेते है।

करनी करने को उत्सुक हो,
धूप हवा में हिल उठते है।"11

यही हाथ किसानी करते है और आनेवाले वैभव के दिन को ऊंगली से टोया करते है, मानो भविष्य अभिन्न रूप में इनके श्रम से जुड़ा हो।

केदार किसान के प्राकृतिक परिवेश के कवि है। इस परिवेश में मनुष्य के श्रम की उपज शामिल है, लेकिन भारतीय किसान को गरीबी, कर्ज आदि पैतृक देय के रूप में मिलती है। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी विवशतापूर्ण दयनीय जीवन का क्रम चलता रहता है। जिन समस्याओं को प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में अंकित करते हैउन्हीं समस्याओं को केदारजी अपनी कविताओं में चित्रित करते है। कवि ने अपने आसपास रहनेवाले गरीबों की जिंदगी को बहुत नजदीक से देखा और महसूस किया है। निम्नलिखित कविता में ग़रीब किसान का मार्मिक चित्र उभरता है -

"जब बाप मरा तब पाया
भूखे किसान के बेटे ने
घर का मलबा, टूटी खटिया,
कुछ हाथ भूमि- वह भी परती
बनिया के रुपयों का कर्जा
हो चुकाने पर नहीं चूकता।
दीमक, गोबर, मच्छर, माता
ऐसे हजार सब सहवासी।
बस यही नहीं जो भूख मिली, सौगुनी बाप से अधिक मिली।"12

संक्षेप में देखा जाए तो केदार ने वही लिखा है, जिसे जीवन की पारदर्शी अनुभूतियों की नग्न आंखों से देखा है। सामाजिक यथार्थ के निरूपण में कवि कहीं भी नहीं चुका है। सत्य को उद्भाषित करने में कवि ने लाग-लपेट का सहारा नहीं लिया, अपितु समाज में व्याप्त विसंगतियों को पूरी सपाट बयानी के साथ चित्रित किया है।

**निष्कर्ष :**

केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ केवल सौंदर्य या भाव की अभिव्यक्ति नहीं हैं, वे सामाजिक चेतना की वाहक हैं। वे समाज की वास्तविकताओं को उकेरते हैं और उसमें बदलाव की आकांक्षा प्रकट करते हैं। उन्होंने कविता को जनजीवन से जोड़ा और उसमें एक नई दिशा दी।

**संदर्भ सूची(References with Page Numbers):**

अग्रवाल, केदारनाथ. बाँसुरी और श्रमिक. राजकमल प्रकाशन, 1984.

1. पृ. 42: 'यह गाँव'
2. पृ. 78: 'हम मेहनत वालों से'
3. पृ. 119: श्रमिक स्त्री का चित्रण
4. पृ. 135: प्रकृति और कृषि
5. पृ. 151: वर्गभेद
6. पृ. 160: बदलाव की आकांक्षा
7. पृ. 167: शोषण का यथार्थ

अग्रवाल, केदारनाथ. गुलमेंहदी. साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद 2009

8. पृ. 62: गुलमेंहदी
9. पृ. 57: गुलमेंहदी
10. पृ. 68: गुलमेंहदी
11. पृ. 135: गुलमेंहदी
12. पृ. 76: गुलमेंहदी.